Vol 3 Issue 2 Nov 2013 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 2, Nov. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

भारत की उच्च शिक्षा पर विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश का प्रभाव

अंजना जैन

प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शास० महारानी लक्ष्मीबाई स्नात. कन्या महा., किला भवन, इन्दौर

सारांश :

15 मार्च 2010 को केन्द्रिय मंत्रीमण्डल ने विदेशी शिक्षा संस्थान विधेयक को मंजुरी दी। जिसका उद्देश्य विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैम्पस स्थापित करने की अनुमति देना है। इसके साथ ही भारत में विदेशी विश्वविद्यालय के कैम्पस स्थापना का रास्ता साफ हो जाएगा। अब भारतीय छात्र देश में रहकर आक्सफोर्ट या येल की डिग्री हासिल कर सकता है। यह कदम देश में उच्च शिक्षा की तस्वीर बदल सकता है। इसके पिछे सरकार ने मंशा जाहिर की है कि, देश में उच्च शिक्षण संस्थाओं के अभाव को समाप्त करना है। शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाना, गुणवत्तावर्धक, ज्ञानवर्धक, प्रतिस्पर्धात्मक, वैज्ञानिक व शोधपरक बनाना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि, कपिल सिब्बल का यह प्रस्ताव कितना कारगर होगा?भारतीय शिक्षा और शिक्षण संस्थानों तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?क्या इससे भारतीय विश्वविद्यालयों का स्तर ऊंचा उठेगा?शोध और रोजगार की कितनी सम्भाव बढ़ेगी?विदेशी विश्वविद्यालयों की संचालन प्रणाली में कितनी चुनौतियाँ आएंगी। जानने की कोशिश की है।

प्रस्तावना :

सूचना एवं प्रौद्यागिकी के इस युग में सम्पूर्ण विश्व एक विश्व ग्राम का रूप धारण करता जा रहा है। इस बढ़ते हुए परिवेश ने मानव समाज के सम्मुख अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। भारत भी इससे अछुता नहीं है। भूमण्डलीकरण के वर्तमान परिदृश्य में हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों एवं मान्यताओं में परिवर्तन हो रहे हैं। परम्परागत मूल्यों एवं मान्यताओं में परिवर्तन का प्रभाव शिक्षा तथा विशेष रूप से उच्च शिक्षा पर पड़ा है। शिक्षा व्यक्ति के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के निर्माण एवं विकास की आधारशीला है। अतः एक शिक्षित प्रशिक्षित उच्च स्तरीय मानव का निर्माण करने में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है। इसलिए सरकार से उच्च शिक्षा विभाग से राष्ट्र एवं समाज की अपेक्षाएं निरन्तर बढ़ रही हैं और विभाग तथा सरकार इन्हें सर्वसुलभ बनाने के लिए कृत संकल्प है। वैश्वीकरण के इस युग में यह सर्वमान्य सत्य है कि, उच्च शिक्षा का अर्थ केवल मानसिक एवं बौद्धिक जानकारियाँ एकत्रित करना नहीं है बल्कि विद्यमान आवश्यकताओं एवं भविष्य की सम्भावनाओं को तलास कर उन्हें प्राप्त करना है। साथ ही सुयोग्य, सुसंस्कृत, उत्कृष्ठ चरित्रवान, प्रबुद्ध पीढ़ियों का निर्माण करना है। इसी मंशा को लेकर विश्व परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए देश के केन्द्रिय मंत्रीमण्डल द्वारा 15 मार्च 2010 को विदेशी शिक्षा संस्थान विधेयक को मंजुरी दी जिसका उद्देश्य विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैम्पस स्थापित करने की अनुमति देना है। इस विधेयक के साथ ही भारत में विदेशी विश्वविद्यालय के कैम्पस स्थापना का रास्ता साफ हो जाएगा। अब भारतीय छात्र देश में रहकर ऑक्सफोर्ट, कैम्ब्रीज, येल की डिग्री हासिल कर सकेगें। यह कदम देश में उच्च शिक्षा की तस्वीर बदल सकता है। सरकार का कथन है कि, इससे देश में उच्च शिक्षा का स्तर ऊंचा उठेगा। उच्च शिक्षण संस्थाओं का अभाव समाप्त होगा। गुणवत्तावर्धक, ज्ञान–विज्ञान वर्धक, प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा का देश में विस्तार होगा। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि, मानव संसाधन मंत्री कपील सिब्बल का यह प्रस्ताव कितना कारगार होगा?इन विदेशी शिक्षण संस्थानों का भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?क्या इससे भारतीय विश्वविद्यालयों का स्तर ऊंचा उठेगा?रोजगार की कितनी सम्भावना बढ़ेगी?विदेशी विश्वविद्यालयों की संचालन प्रणाली में कितनी चुनौतियाँ आएंगी?जानने की कोशिश की है।

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली का इतिहास

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य आधार वर्ण व्यवस्था था। समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र इन चार वर्गों में बंटा था। शिक्षा देने का मुख्य दायित्व ब्राह्मणों का था। शुद्र वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा गया था। लेकिन कालान्तर में नालन्दा व तक्षशिला विश्वविद्यालय ज्ञान व शिक्षा के सर्वोच्च केन्द्र बन गये थें जब देश अंग्रेजों के आधिन रहा उस समय लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली अपनाई गई जिसका मुख्य उद्देश्य देश में सिर्फ क्लर्क पैदा करना था और इसके प्रभाव से आज तक देश नहीं उभर पाया है। जब देश आजाद हुआ तो उच्च शिक्षा की दो मुख्य संस्थान U.G.C. और NASSCOM स्थापित किये गये जो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही है। देश में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति निम्नानुसार है।

Title: *भारत की उच्च शिक्षा पर विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश का प्रभाव* **Source: Review of Research [2249-894X]** *अंजना जैन* **yr:2013 vol:3 iss:2**

भारत में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति

वर्ष	विष्वविद्यालय	कॉलेज	कुल
1947–48	20	496	516
1950–51	28	578	606
1960–61	45	1819	1864
1970–71	93	3227	3320
1980–81	123	4738	4861
1990–91	184	5748	5932
2000–01	266	11146	11412
2009–10	504	25951	26455

Soruce : U.G.C. and Higher Education Annual Reports Ref. (6-7)

विदेशों में अध्ययनरत् भारतीय विद्यार्थी – कैम्ब्रीज यूनिवर्सिटी की रिपोर्ट के अनुसार 1880 से पहले यूरोप में पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थियों की संख्या 100 से अधिक नहीं थी।[1] जब देश आजाद हुआ और 1959–60 की स्थिति देखें तो अकेले ब्रिटेने में 3510 भारतीय विद्यार्थी वहाँ उच्च अध्ययन करने गये थे और कई विद्यार्थी तो इंडियन हाऊस में रजिस्टर्ड नहीं थे[2] वे प्रायवेट शिक्षण संस्थानों में थे। वर्ष 2008–09 में लगभग 90,000 विद्यर्थी अमरिकी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।[3] सन् 2010–11 में लगभग 103900 विद्यार्थी अमेरिका मे पंजीकृत थे।[4] 2010 में कनाडा में 12,000 और इससे दुगने आस्ट्रेलिया में अध्ययन हेतु गये थे। पहले विदेशों में अध्ययन करने जाना प्रतिष्ठा की बात मानी जाती थी किन्तु म भूमण्डलीकरण के इस दौर में विदेशी विश्वविद्यालय की शिक्षा रोजगार परक, आत्मनिर्भरत प्रदान करने वाली यान्त्रिकी शिक्षा है और इसके लिये फैलोशिप व भविष्य में अच्छे पैकेज मिलने की सम्भावना ने विदेशी विश्वविद्यालयों की तरफ भारतीय उच्च व मध्यम वर्गीय विद्यार्थियों को आकर्षित किया है।

विदेशी विश्वविद्यालयों की भारत में प्रवेश की स्थिति

देश की सरकार द्वारा विदेशी शिक्षा संस्थान (प्रवेश एवं संचालन) विधेयक को मंजूरी के साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रस्ताव के अनुसार विदेशी विश्वविद्यालयों को कम्पनी अधिनियम के तहत एक कम्पनी के तौर पर अपना परिसर खोलने की अनुमति दी जा सकेगी। इसमें संस्थान को कम्पनी अधिनियम की आवश्यक शर्तें 1956 की धारा 25 के अन्तर्गत पंजीकृत होना होगा एवं अन्य शर्तें नियमानुसार हैं।

1.भारत में परिसर स्थापित करने के लिए आवेदन करने वाली विदेशी शिक्षण संस्थान को नियमों के तहत बिना मुनाफा कमाने वाली ऐसी विधिक इकाई होना चाहिए जो पिछले 20 वर्षों से उच्च शिक्षा के लिए कार्य कर रही हो।

2.विदेशी शिक्षण संस्थान को भारत में अपने परिसर में वैसा ही पाठ्यक्रम लागू करना होगा जैसा उनके मुख्य परिसर में पढ़ाया जाता है और इसकी गुणवत्ता भी समान होना चाहिए।

3.विदेशी शिक्षण संस्थाओं की डिग्रीयाँ तभी मान्य की जाएगी जब वे भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) की व्यवस्था के अनुरूप होगी।

4.नये प्रवेशकों को पंजीकरण के लिए U.G.C. के पास 50 करोड़ रु. जमा करवाने होंगे। किन्तु अधिनियम या प्रस्तावित नियम के किसी प्रावधान का उल्लघंन करने पर 50 लाख से 1 करोड़ रु. का जुर्माना लगाने का प्रस्ताव किया गया है।

5.समयबद्ध पंजीकरण किया जायेगा, किन्तु उन्हें विभिन्न स्तर पर पंजीकरण प्रक्रिया से गुजरना होगा। पंजीकरण निकाय आवेदन पत्रों की जांच कर सरकार को सलाह देगा कि कैम्पस स्थापित करने की अनुमति दी जाय या नहीं।

6.विदेशी विश्वविद्यालय राष्ट्रीय कानून का पालन करेंगे पर उन्हें SC/ST/OBC विद्यार्थियों को आरक्षण नहीं देना होगा।

7.विदेशी विश्वविद्यालयों को निजी विश्वविद्यालयों की तरह प्रवेश प्रक्रिया और शुल्क तय करने की स्वतन्त्रता होगी। किन्तु प्रवेश एवं संचालन नियमों को प्रोस्पेक्टस में अनिवार्य रूप से प्रकाशित करवाना होगा और शिक्षा के माध्यम से जो लाभ प्राप्त होगा उन्हें वह अपने मूल देश में ले जाने की अनुमति विदेशी शिक्षण संस्थानों को नहीं होगी।

भारतीय शिक्षा पद्धति व संस्कृति के आधार
हमारी संस्कृति के मुख्य वैशिष्टय हैं –

सत्य एक है, विद्वान लोग उसे अनेग ढंग से कहते हैं।
शिक्षा का मुख्य आधार आध्यात्म है।
विश्व एक परिवार है और सृष्टि में एकात्मकता है।

भारत का ज्ञान विज्ञान ऋषि–मुनियों की जीवन की प्रयोगशाला से अविस्कृत सिद्धान्त है जो हमारी शिक्षा, संस्कृति, पाठ्यचर्चा और

पाठ्यक्रमों का हिस्सा है। अरविन्दजी ने कहा था –"युग युगान्तर से भारत की ओजस्वी वाणी कोई अन्तिम शब्द नहीं है, यह जीवित है, उसे संसार तथा मानवता को बहुत कुछ देना शेष है।"[7] हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति एक अच्छा मनुष्य बनाती है।

वैश्वीक शिक्षा व संस्कृति का आधार –वैश्वीकरण एक आकर्षक शब्द है। इस शब्द के उच्चारण में मानवता का व्यापक स्वरूप उपस्थित होता दिखाई देता है। लेकिन इसी शब्द का बारीकी से विश्लेषण करते हैं तो लगता है कि वैश्वीकरण की अवधारणा क्रय–विक्रय की मंडी है। व्यवसायीकरण और निजीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र को भी अपनी जकड़ में ले लिया है। विदेशी विश्वविद्यालयों की शिक्षा पद्धति बाजारवाद पर आधारित केरियर ओरिएन्टेड, रोजगार परक, अधिक अवसर प्रदान करने वाली, गुणवत्ता, विविधता, शोधपरकता पर आधारित है। जो विद्यार्थी को एक अच्छा कर्मी बनाती है।

विदेशी विश्वविद्यालय के प्रवेश का प्रभाव– भूमण्डलीकरण के प्रभाव से शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों एवं मान्यताओं में अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। देश में जहाँ अवसर की सम्भावनाएं बढ़ी हैं, वहीं बाजारवाद व प्रतिस्पर्धा के कारण कई चुनौतियाँ खड़ी हुई हैं।

सकारात्मक प्रभाव

देश में आधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण, उच्च कोटि की शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध होगी जिसके विद्यार्थी को व्यवसाय परक शिक्षा दी जाएगी जिसमें युवा स्वावलम्बी बन सके और देश की उन्नति व समृद्धि में अपना योगदान दे सके।
सुयोग्य प्राध्यापकों की नियुक्ति, उच्च कोटि के भवन, समृद्ध पुस्तकालय, सुसज्जित प्रयोगशालाएं, कम्प्युटरीकृत महाविद्यालय पर विशेष ध्यान रहेगा।
विश्व के विभिन्न हिस्सों में नवीन शोध परिणामों के ज्ञान–विज्ञान से परिचय एवं उनका संवर्धन होगा।
भारतीय विश्वविद्यालयों का प्रतिस्पर्धा के कारण शैक्षणिक स्तर ऊंचा उठेगा।
उच्च शैक्षिण संस्थानों का देश में अभाव दूर होगा।
आज जो धन विदेश में पढ़ाई के नाम पर विदेश जा रहा है वह अब देश में ही रहेगा।
अधिक अनुसंधान के अवसर उपलब्ध होंगे। शोध परक शिक्षा का विस्तार होगा।
गुणवत्ता बढ़ेगी और नस्लवाद (विदेशों में भारतीय छात्राओं पर हमले) खत्म होगा।
देश में परिसर स्थापित होने से भारतीय संस्कृति और मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नकारात्मक प्रभाव – विदेशी विश्वविद्यालय शिक्षा देने नहीं शिक्षा का व्यवसाय करने के उद्देश्य से अपने कैम्पस भारत में स्थापित करना चाहते हैं उनकी नजर हमारे देश की युवा शक्ति पर अच्छे कर्मी पाने और सस्ते श्रम पर है। इन विदेशी संस्थानों का आगमन देश में कई चुनौतियाँ खड़ी कर रहा है। जैसे
इन विदेशी विश्वविद्यालयों के परिसरों व कार्य प्रणाली पर नजर रखने के लिए सख्त व सतत् निगरानी ऐजेन्सियों की आवश्यकता होगी।
पाठ्यक्रम सामग्री क्या होगी?मूल्यांकन कैसे किया जाए?मानक स्तर का निर्धारण कैसे किया जाए?इसके लिए नियमांकन सस्थाओं का भी देश में अभाव है। कानूनी स्थिति भी स्पष्ट नहीं है।
इन विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदत्त शिक्षा ने गुणवत्ता का कोई आश्वासन नहीं दिया गया है। भारत में विदेशी डिग्री अब तक न तो मान्य है और न ही इन पर कोई तंत्र है।
शिक्षा में एक प्रकार की जाति प्रथा जन्म ले रही है जो धनवानों को I.I.T., M.B.A., C.A., M.B.B.S. आदि उपाधियाँ पाने वाला उच्च भावना से ग्रस्त वर्ग और दूसरी तरफ धनाभाव से ग्रस्त, प्रवेश से वंचित निम्न देशी शिक्षण संस्थानों मे पढ़ने वाला वर्ग इस असमानता से असन्तुलन बढ़ेगा।
कई फर्जी शिक्षण संस्थाओं की दुकानें खुलने की सम्भावनाऐं बढ़ेगी।
देश में केवल तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। सामाजिक और मानवीय विषयों की उपेक्षा बढेगी जो देश के लिए हानिकारक होगा।
शिक्षा माफिया व शिक्षा ऋण देने के नाम पर विदेशी बैंकों की गिध दृष्टि भारत के शिक्षा क्षेत्र पर है।
पहले से स्थापित देशी विश्वविद्यालयों को अपने अस्तित्व के लिए कम संसाधनों के साथ असामान्य संसाधनों से युक्त विश्वविद्यालयों से प्रतिस्पर्धा करना होगी।
भारतीय संस्कृति, मूल्य, चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास की शिक्षा का इन विदेशी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कोई स्थान नहीं होने से युवा पीढ़ी स्वेच्छाचारी होती जा रही है और पाश्चात्य अन्धानुकरण की राह पर युवा चल रहा है। सुझाव –

विदेशी विश्वविद्यालयों को केवल भारी निवेश वाली शिक्षा (प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग) में निवेश करने की अनुमति दी जाए।
केवल अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों को आने की अनुमति दी जाए।
इन विश्वविद्यालयों में अनुसंधान पर ज्यादा जौर दिया जाना चाहिए जिससे भारत में न्यूनतम संसाधन व्यय हो।
कानूनी पहलुओं की अच्छे से जांच करे, गुणवत्ता, प्रवेश, पाठ्यक्रम तथा संचालन व्यवस्था पर निगरानी रखे।
इन कैम्पस में भारतीय नागरिक की भागीदारी हो तथा सभी वर्ग के छात्रों के लिए प्रवेश सुनिश्चित हो।

निष्कर्ष –

वैश्वीकरण के इस युग में हमारे ज्यादातर शिक्षा संस्थान ज्ञान–विज्ञान का केन्द्र बनने से लगातार पिछड़ गये हैं। साधनाभाव को ध्यान में रखते हुए सरकार को इस विषय पर लचीला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इन पर पर्याप्त निगरानी (U.G.C. द्वारा) रखी जाए। पारदर्शिता व मानक स्तर बनाए रखने के लिए कठोर नियम होना आवश्यक है साथ ही भारतीय संस्कृति व मूल्यों पर विपरित असर न पड़े। अगर भारतीय उद्यमी दूनिया में झन्डे गाड़ रखते हैं तो शिक्षण संस्थाएं क्यों नहीं। हमारे विश्वविद्यालय श्रेष्ठ प्रतिस्पर्धी बनकर ऐसे कदम उठाऐं और इन विदेशी विश्वविद्यालयों को कड़ी टक्कर दें तभी उच्च शिक्षा का स्तर सार्थक होगा।

सन्दर्भ सूची–

(1)डॉ. खान एम – विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत पर प्रभाव 2012 पृ.क्र. 02
(2)डॉ. खान एम – विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत पर प्रभाव 2012 पृ.क्र. 02
(3)डॉ. खान एम – विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत पर प्रभाव 2012 पृ.क्र. 02
(4)डॉ. खान एम – विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत पर प्रभाव 2012 पृ.क्र. 02
(5)Sen Amartya – Indian Education Services – A hot opportunity June 2009
(6)Panel Discussion on – Internationalization of Indian Higher Education The Impact of Foreign

Universities in India Nov. 26th 2009
(7)सदना ज्योति, होठी बी.एस. – रिसर्च इन्टरनेशनल जर्नल Vol I अंक 4 अगस्त 2011 ISSN 223/-5780

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net